झूमर

कहँवा में रामजी के जन्म भयो !
हरि झूमरी ।
अब कहँवा में बाजेला बधाव !
खेलब हरि झूमरी ।।
अयोधया ही रामजी के जनम भयो,
हरि झूमरी ।
अब चारू ओर बाजेला बधाव,
खेलब हरि झूमरी ।।
कहँवा से आवेला बूँकवा ?
हरि झूमरी ।
अब कहँवा से आवेला अबीर ?
खेलब हरि झूमरी ।।
पुरूब से आवेला बूँकवा,
हरि झुमरी ।
अब पच्छिम से आवेला अबीर,
खेलब हरि झूमरी ।।
उड़त आवेला बूँकवा !
हरि झूमरी ।

अब चमकति आवेला अबीर,

खेलब हरि झूमरी ॥

कहँवा जे परेला बूँकवा !

हरि झूमरी ।

अब कहँवा में परेला अबीर ।

खेलब हरि झूमरी ॥

माँड़वा में परेला बूँकवा,

हरि झूमरी ।

अब कोहबर में परेला अबीर,

खेलब हरि झूमरी ॥

चिट्ठिया पर चिट्ठी लिखी,

राम भेजवले हरि, झूमरी ।

अब करऽ सीता सोरहो सिंगार,

खेलब हरि, झूमरी ॥

चिट्ठिया पर चिट्ठी लिखी,

सीता भेजवली, हरि झूंमरी ।

अब उमड़ि ना आवे सिरी राम,

खेलब हरि झूमरी ॥

एक फूचकरिया जब राम चलवले,

हरि झूमरी ।

अब सीता सुन्दर भइली सराबोर,

खेलब हरि झूमरी ॥

अभ्यास

1. कहँवा रामजी के जन्म भईल आ कहँवा बधाई बाजल?
2. कहँवा से झूमर खेलेला अबीर आवेला?
3. इ गीत झूमर बा। ई कवना-कवना अवसर पर गावल जाला?
4. केकरा चिट्ठी पर सीता सोरहो सिंगार कइली?
5. के फिचकारी चलवलस आ के रंग से सराबोर भइल?
6. भोजपुरी लोक जीवन में झूमर के बहुते प्रचलन बा अइसन एगो आउर झूमर लिखीं।

शब्द-भंडार

झूमरी – एक प्रकार के गीत

बधाव – खुशी प्रकट कइल

बूँकवा – चावल के चूर कइ के व चीनी में भूंज के बनल खाद्य सामग्री

अबीर – एगो रंगीन बुकनी जेसे होली खेलल जाला आ खुशी के अवसर पर लगायल जाला

सोरहो सिंगार – पूरा तरह सजल-धजल

फूचकारी – रंग फेंके वाला पिचकारी

तरावोर – तर-बतर भगइल, सराबोर भइल।

पूरबी

खेलत रहलीं हम सिपुली मउनिया
ननदिया मोरि हे, आई गइले डोलिया कँहार.......
बाबा मोरा रहितें रामा, भइया मोरा रहितें
ननदिया मोरि हे, फेरी दिहतें डोलिया कँहार.......
काँच-काँच बाँसवा के डोलिया बनवलें
ननदिया मोरी हे, लागी गइले चारि गो कँहार.......
नाहिं मोरा लूर ढंग एकोना रहनवाँ
ननदिया मोरि हे, लेई के चलले ससुरार.......
कहत महेन्दर मोरा लागे नाहीं मनवा
ननदिया मोरि हे, छुटी गइले बाबा के दुआर.......

अभ्यास

1. सिपुली मउनिया के खेलत रहली?
2. केकरा फेर में पड़ि के बालेपन में खेलत रह गइली?
3. डोली इहवाँ केकर प्रतीक बा?
4. डोली कँहार के भेजल?
5. एह कविता में ननद केकरा के कहल गइल बा?
6. संसार से चले के बेरिया केकर कमी खटकऽता?
7. केकरा चलते दुलहिन कवनो लूर ढंग ना सिखली?
8. कविता के नायिका के बा?

    (क) भउजी (ख) ननदिया

    (ग) जीवात्मा रूपी दुलहिन (घ) एह में से केहू ना
9. काँच-काँच बाँसवा के डोलिया के अर्थ बा–

    (क) एगो सवारी (ख) अर्थी

    (ग) बियाह का बेरि के डोली (घ) एह में से कवनो ना
10. एह पूरबी में जीवात्मा रूपी दुलहिन कवना चीज में अझुरा के रह गइली?
11. संसार से ऊब के जीवात्मा कहाँ जाय के चाह रहल बा?

भाषा अध्ययन

1. कविता के टेक में कहार से मिलत जुलत आउर कवन-कवन शब्द आइल बा।
2. चार कहारि के वास्तविक अर्थ का बा?
3. ई कँविता कवना धुन में रचल गइल बा?
4. काँच-काँच जइसन पाँच गो शब्द अपना मन से लिखीं।

शब्द-भंडार

सिपुली-मउनिया	–	बाँस, मूँज के बनल अन्न फटके राखे वाला चीज
फेरी दिहते	–	वापस कर दिते, लवटा दिते
काँच-काँच	–	कच्चा-कच्चा, हरियर-हरियर
चारिगो	–	चार गो
लूर-ढंग	–	काम करे के तरीका, हुनर
एकोना	–	एको गो ना
ससुरार	–	ससुराल, सास-ससुर के घर
दुआर	–	दरवाजा, द्वार

सोहर

सोने के खड़उआँ राजा दशरथ, चटर चटर कर हो।
हेलनि, तोहरा के रानी बोलावेली, त रानी मोर उदासल हो ।।1।।
पइसी जगावेली हेलनिया, उठीं ना सिर साहेब हो।
साहेब, देखलीं निरबंसिया के मूँह, आजु रे दिन कइसन हो ।।2।।
अतना बचन राजा सुनलन, सुनहिं नाहिं पावेले हो।
राजा, गोड़ मुड़ तानेले चदरिया, सूतेले गजओबर हो ।।3।।
पइसी जगावेली कोसिला रानी, उठीं ना सिर साहेब हो।
साहेब, उठी के करीं ना दतुअनिया, त अवरू असननवा नू हो ।।4।।
कइसे के उठीं हम कोसिला रानी, हमरा बड़ा सोच बाटे हो।
आरे नीचहिं जात के हेलनिया, हमें निरबंसिया कहे हो ।।5।।
आरे कोसिला के भइले राजा रामचन्दर, सुमितरा के लछुमन हो।
आरे, केकई के भरत भुआल, तीनो रे घरे सोहर हो ।।6।।
ओबरी से बोलेली कोसिला रानी, सुनीं राजा दशरथ हो।
ए राजा, सोने के तिलरिया गढ़ाईं, हेलनिया पहिरावहु हो ।।7।।

अभ्यास

1. सोहर केकरा कहल जाला? पता करीं।
2. भोर पहर महल में काहे बधाई बाजे लागेला।
3. बच्चा के जनम के समय कवन-कवन जोगार के जरूरत पड़ेला?
4. एह गीत में उन्हन के जगहा कवन चीज के प्रयोग के वर्णन बा?
5. जनम के समय सम्पन्न होखे वाला विधि के संक्षेप में वर्णन करीं।

शब्द-भंडार

साँझहिं	–	साँझ के समय
भोरहिं	–	भोर के समय, सबेरे
बधइआ	–	खुशी के अवसर पर गावे वाला गीत
नहवाएब	–	स्नान कइल
पीतांबर	–	पीयर चादर
इजुरिया	–	विधि के समय अँजुरी में राखे वाला चावल
इजोरी	–	अँजुरी
भरायब	–	भरवाएब, भरे के संकल्प
हेलनिया	-	नौकरानी
तिलरिया	-	तीन लर के एगो हार